IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ व उनके सिद्धांत :एक अवलोकन

महत्वपूर्ण शब्दावली: चतुर्याम, जिनालय, केवल्य,मोक्ष, तीर्थंकर, एषणा, प्रवर्तक

डॉ पुनम कुमारी

विभागाध्यक्ष, सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग

राधा गोविन्द विश्वविद्यालय रामगढ़

सोनल कुमारी

शोधार्थी

इतिहास विभाग

राधागोविंद विश्वविद्यालय, रामगढ़

भूमिका

विचारकों द्वारा इतिहास को धर्म संस्कृति जाति देश और सभ्यता का प्राण माना जाता है इतिहास मानव की वह प्रेरणा है जिससेअनुप्राणित होकर मानव प्रगति की दिशा में आगे बढ़ सकता है / अपने लक्ष्य को पा सकता है जैन परम्परा कभी समृद्ध और गौरवशाली इतिहास रहा है /

जैन शब्द का मूल उद्गम जिन है राग ,द्वेष के विजेता जिन कहलाते है और जिन भगवान के अनुयायी जैन कहलाते है जैन धर्म के प्रवर्तक तीर्थंकर होते है जैन धर्म विश्व के प्राचीनतम धर्मो में से एक है /चिन्तको के मतानुसार सृष्टि क्रम की दृष्टि से इस धर्म को अनादि माना जा सकता है किन्तु व्यवहार में युग परिवर्तन के साथ-साथ उसके प्रवर्तक भी बदलते रहे है वर्तमान कालचक्र के अनुसार जैन धर्म के प्रवर्तकों कि सूची में पहला नाम तीर्थंकर ऋषभ और 23 वे पार्श्वनाथ का और 24 वें तीर्थंकर महावीर हैं/[1]

तीर्थंकर एक पारिभाषिक शब्द है/ तीर्थकर वह होता है जो धर्मतीर्थ का प्रवर्तन करता है 23 वे तीर्थंकर पार्श्वनाथ ऐतिहासिक पुरुष है/ इनका तीर्थ प्रवर्तन भगवान महावीर से 250 वर्ष पहले हुआ भगवान महावीर के समय तक इनकी परम्परा अविच्छिन थी भगवान महावीर के पिता पार्श्वनाथ के अनुयायी थे अहिंसा और सत्य की साधना समाज व्यापी बनाने का श्री भगवान पार्श्व को जाता है/ अहिंसक परम्परा के उन्नयन के द्वारा वे बहुत लोकप्रिय हो गये / इसकी जानकारी हमे भगवान पार्श्वनाथ के लिए प्रयुक्त पुरुष दानिय विशेषण द्वारा मिलता है/

जन्म – पार्श्वनाथ 23 वें तीर्थंकर के रूप में जाने जाते है जिनका जन्म पौष कृष्णा दशमी की मध्यरात्रि में वाराणसी के नरेश अश्वसेन की महारानी वामदेवी ने पार्श्वनाथ को जन्म दिया/ राजा अश्वसेन ने राज्यभर में जन्मोत्सव का विशेष आयोजन किया/ नामकरण के दिन भव्य रूप से प्रीतिभोज का आयोजन किया/नामकरण के सम्बन्ध में कह गया कि जब बालक गर्भ में था तब एक बार रानी के साथ उपवन में गया था अँधेरी रात थी कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था उसी समय एक कलिंदर सर्प निकला फिर पार्श्व में चलता हुआ सर्प दिखाई दिया/वह उसे जगाकर कहीं और ले गई तभी पार्श्व जीवित बच सका यह गर्भ का ही प्रभाव था कि रानी के पास सांप दिखाई दिया अत: बालक का नाम पार्श्वनाथ रखा/[1]

पार्श्वनाथ सांसारिक विषयों के प्रति सर्वथा अनासक्त थे विवाह करना नही चाहते थे किन्तु माता पिता के आग्रहपर नरेश प्रसेनजित की पुत्री से विवाह किया दिगंबर केसशस्थल परम्परा केअनुसार उन्होंने विवाह नही किया थापर श्वेताम्बर परम्परा मानती है कि पिता कि आज्ञा का विरोधं कर पते के कारण उन्होंने विवाह किया परन्तु उनका मन गृहस्थ जीवन में नहीं लगा क्योंकि उनमें वैराग्य की भावना बढ़ रही थी/ [2]

एक बार पार्श्वनाथ गंगा किनारे घुमने गये थे कमठ पंचाग्नि तप कर रहा था / चारों दिशाओं में अग्नि थे जल रही थी सूर्य का प्रचंड तप आ रहा था झुन्दके झुण्ड भक्त आ रहे थे और प्रसाद पाकर अपने को धन्य मान रहे थे/ उसी समय पार्श्वनाथ ने जाना कि जो धुनी जल रही है असल में एक बहुत बड़ा नाग और नागिन का जोड़ा लकड़ी के साथ जल रहा है वे यह देखकर द्रवित हो उठे वे सोचने लगे ये कैसा अज्ञान है तप दया नहीं है क्या उन्होंने कमठ तापस से कहा धर्म का मूल दया है यह आग में जलाने से किस तरह सम्भव है क्योंकि अग्नि प्रज्वलित करने से विभिन्न प्रकार के जीवों का नाश होता है यह सुनकर तापस क्रोधित हो उठे और बोले कुमार तुम धर्म के विषय में क्या जानते हो तुम्हारा काम हाथी घोड़ो पर विनोद करना है/ धर्म का मर्म तुम्हे क्या पता वह हम जानते हैं अगर अग्नि में कुछ है तो बताओ?[3]

तब राजकुमार ने सेवकों से अग्निकुंड से लकड़ी निकलने को कहा लकड़ी को सावधानी पूर्वक चीरा गया उसमे से जलता हुआ नाग का जोड़ा निकला पार्श्वकुमार ने नागो को नमस्कार कर महामंत्र सुनाया शुभ भावों में आयु पूर्ण कर वाह नाग जाति के भवनवासी देवों में धर्नेंद्र नामक इंद्र बना और नागिन पद्मावती देवी बनी इस पार्श्वनाथ चेतना व् कृपा से नाग का उद्द्रार हुआ सभी e इनकी प्रशंसा कि उस युग में रूढ़ी परम्पराओं पर उन्होंने कुठाराघात किया उन्होंने जनता को सन्देश दिया कि हिंसा अज्ञान आदि से आत्महित नही सहा जा सकता लोग धर्म का सही अर्थ समझ गए धीरे धीरे तपस की प्रतिष्ठा कम होने लगी उनका तिरस्कार होने लगा अपनी आयुपूर्ण कर अज्ञान तप के कारण असुर कुमार में मेघमाली नाम का देव बना/[4]

पार्श्वनाथ के अलौकिक व्यक्तित्व से सम्बंधित कई अनुश्रुतियां उपलब्ध है जब ब्राह्मण तापस कमठ से सर्प कि रक्षा पार्श्वनाथ ने कि थी जिसने मृत्यु के समय पर्श्वाथ का प्रतिबोध पाकर धर्नेन्द्र देवता की योनि प्राप्त की और तत्पश्चात अपने फनों का छत्र बनाकर भयंकर वर्षा और तूफान से पार्श्वनाथ की रक्षा की थी/

पार्श्वनाथ उदार एवं परोपकारी होने से लोकप्रिय थे फलत: उन्हें "पुरषादनीय" कहा गया कुमारावस्था से तीस वर्ष कि आयु तक सुख एवं वैभव का उपभोग कर वे दीक्षा ग्रहण कर 84 दिन की घोर तपस्या के पश्चात् कैवल्य ज्ञान प्राप्त कर अपनी धर्म देशना द्वारा कई त्रसितों और मुमुक्षुओं को सत्य के मार्ग पर आरुढ़ कर कैवल्य और मोक्ष की ओर उन्मुख किया/[5]

वैराग्य और दीक्षा

तीर्थंकरो की गणना स्वयं बुद्ध में की जाती है वे किसी को बोध पाकर विरक्त नहीं हुए पार्श्वनाथ भी सहज विरक्त थे/ भोग्यकर्मो के फल भोगों को सही जानकर पार्श्वनाथ ने संयम ग्रहण करने का संकल्प लिया और मर्यादानुसार लोकतान्त्रिक देवो से अनुरोध किया कि वे धर्म तीर्थ प्रकट करे संसार में बोध पानेवाले की तीन श्रेणियां है स्वयं बुद्ध, प्रत्येक बुद्ध, बुद्ध घोषित, वर्ष भर दान पुण्य के उपरांत वाराणसी नगर के आश्रम पर उद्धान में विशाल जनसमूह के बीच अशोक वृक्ष के नीचे तीन सौ अन्य लोगों के साथ अनगार धर्म स्वीकार किया उसी समय उन्हें मन:पर्याय ज्ञान हो गया पुन: वे वहाँ से सन्निवेश पहुंचे और धन्य नामक गृहस्थ के यहाँ खीर से अष्ट तप का पारण किया /[6]

दीक्षा ग्रहण करने के बाद कहा कि वे छद्म स्थकाल में समय पूर्णतय समाधिस्थ रहूँगा सभी प्रकार की कठिनाइयों मै सहन करूँगा/ आगे वाराणसी से चलकर वे शिवपुरी नगर पहुंचे और कौशाम्ब वन में ध्यानमुद्रा में खड़े हो गये वहाँ धनेन्द्र अपने पूर्वजन्म का स्मरण कर आये और उनके ऊपर छत्र छाया कर दी/ तब से उस जगह का नाम अहिछत्र हो गया पुन:भगवान पार्श्व वाहन से तापश्रम पहुंचे और एक वटवृक्ष के नीचे कायो उत्सर्ग कर खड़े होगये उसी समय कमठ के जीव जो मेघमाली असुर बना था अपने ज्ञान से प्रभु को ध्यान मग्न देख पुर्नभव की स्मृति से बहुत क्रोधित हुआ और बदला लेने चाहा उसने विभिन्न जीव पशु का रूप धारण कर जैसे विच्छू, चीता, सांप, सिंह का रूप लेकर भगवान पार्श्वनाथ को कई प्रकार का कष्ट दिया वैताल का रूप धारणकर डराने की भी कोशिश की परन्तु भगवान पार्श्वनाथ पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा / तब उसने मुसलाधार बारिश की ओले बरसाए वन्य जीव घबराकर भागने लगे कई क्षेत्र जलमग्न हो गए/ भगवान के नाक तक जल छूने लगा उन्हें पार्श्वनाथ का ध्यान आया वे डूबने वाले हैं तब धनेन्द्र ने उनके पैरों के नीचे लम्बी नाल वाले कमल की रचनाओं और मस्तक पर सात फनों का छात्र बनाकर पुरे शरीर की रक्षा की असुर मेघवाल को धनेंद्र ने समझाया और कहा कि –तुम जिसे कष्ट पहुंचा रहे हो उससे तेरा सर्वनाश हो जायेगा वो दया की मूर्ति है उनका कुछ नहीं बिगड़ेगा/ धनेन्द्र की बात सुनकर मेधमाली भयभीत हुआ पार्श्वनाथ के चरणों मे क्षमा याचना की और लौट गया उपसर्ग पर विजय प्राप्त कर भगवान अपनी अखंडता में लीं रहे वे अनेक स्थलों का भ्रमण करते हुए वाराणसी पहुंचे और अपनी छद्मवस्था कि 85 रातें बितायी 84 वें दिन भगवान आश्रम पद उद्धान में अष्टम के साथ घातकी वृक्ष के नीचे ध्यानमग्न हो गए दुसरे चरण में मोह कर्म को समाप्त कर केवल्य ज्ञान तथा केवल्य दर्शन को प्राप्त किया /[7]

प्रथम देशना व धर्म प्रचार -

भगवान का पहला उपदेश –बिना धर्म के जीवन शून्य है अत: धर्म की आराधना करो कर्मजन्य बंधन और आवरण काटने का एक मात्र मार्ग धर्म है / साधन सम्यक ज्ञान सम्यक दर्शन और सम्यक आचरण या चरित्र यही मुक्ति का सच्चा मार्ग हैभगवान कि प्रथम देशना अत्यंत प्रभावशाली थी प्रभु की वाणी सुनकर महाराज अश्वसेन विरक्त हुए और राज्य पुत्र को सौंपकर स्वयं प्रव्रजित हो गए / महारानी वामदेवी और प्रभावती आदि कई स्त्रियाँ भी आहार्ति दीक्षा स्वीकार की इसके अलावे शुभदत्त, वेद ज्ञाता ने भी इस धर्म को स्वीकार किया /

श्री पारसनाथ 70 वर्ष तक देश देशांतर में विहार करते हुए अंत में सम्मेद शिखर पधारे अब उनके मोक्ष में एक्मः शेष रहा इसलिए उनकी वाणी तथा विहार इत्यादि क्रियाएँ रुक गई/ सम्मेद शिखर की सबसे ऊँची टोंक पर प्रभु खड़े थे तीसरा तथा चौथा शुक्ल ध्यान पूर्ण करके भगवान दुसरे ही क्षण उर्ध्वागमन करके मोक्ष पधार गए शरीर का त्याग कर अशरीरी हो गए/ इस संसार का त्याग करके महा आनंद सिद्ध दशास्यमें परिणत हो गए/ भगवान श्रवण शुक्ल सप्तमी को मोक्ष पधारे थे इसलिए यह दिन मोक्ष सप्तमी के नाम से जाना जाता है/ इन्ही के नाम से इस पर्वत का नाम पारसनाथ हिल पड़ा/ विदेह और वैशाली के शक्तिशाली वज्जि संघ में भी पार्श्वनाथ का धर्म ही लोकप्रिय था/ कलिंग नरेश पांचाल नरेश भी पार्श्वनाथ के उपदेशों से प्रभावित रहे पार्श्वनाथ की पुण्यतिथि पर पारसनाथ में आज भी भव्य आयोजन होता है/[8]

परवर्ती जैन लेखकों के अनुसार राजा नगन्जीत, विदेह के राजा निमि, पांचाल के शासक दुर्मुख ,विदर्भ के राजा भीम और कलिंग शासक करकुंडू ने जैन अनुशासन को स्वीकार किया था/ तीर्थकरों को स्मरण कर उनके द्वारा दिए गये उपदेशों शिक्षाओं और सिद्धन्तों का शुद्ध आचरण के साथ पालन करें/ इस प्रकार यह बहुत पवित्र मानाजाता है / इस क्षेत्र की पवित्रता और सात्विकता के प्रभाव से ही यहाँ पाए जाने वाले शेर बाघ आदि जंगली पशु का स्वाभाविक हिंसक व्यवहार नही देखा गया/ इस कारण तीर्थयात्री भी बिना भय के यात्रा करते है / सम्भवत: इसी प्रभाव के कारण प्राचीन समय में आचार्यों, भट्टारक,कई राजाओं श्रावकों ने आत्म कल्याण और मोक्ष प्राप्ति की भावना से तीर्थ यात्रा के लिए विशाल समूहों के साथ यहाँ आकर तीर्थकरों की उपासना ध्यान और कठोर तप किया /[9]

जैन ग्रंथों के अनुसार सम्मेद शिखर और अयोध्या इन दोनों का अस्तित्व सृष्टि के समानांतर है इसलिए इनको शाश्वत माना गया है/ परन्तु जिस धरती पर हम है यह आशाश्वत है इसलिए यहाँ कोई शाश्वत तीर्थ नहीं है/ प्राचीन ग्रंथो में यहाँ पर तीर्थंकर से मोक्ष प्राप्त किया है यही कारण है कि जब सम्मेद शिखर की यात्रा होती है तो हर तीर्थयात्री का मन तीर्थंकरों का सस्मरण कर अपार श्रद्धा, आस्था उत्साह एवं ख़ुशी से भरा होता है/

जैन धर्म प्राचीन धर्मोमे एक है/ इस धर्म की स्थापना इसके प्रथम तीर्थंकर ऋषभ देव द्वारा कियागया/ तीर्थंकर का अर्थ जैन धर्म के अनुसार धर्म गुरु होता है अत:जैन धर्म के प्रथम गुरु ऋषभ देव है/ जैन शब्द कि उत्पति शब्द "जिन"से हुआ है जिसका अर्थ होता है इन्द्रियों पर विजय पाना जैन धर्म के कुल 24 तीर्थंकर हुए जिसमे सबसे पहला ऋषभ देव और अंतिम महावीर

स्वामी है जैन धर्म के धार्मिक स्थल को जिनालय कहा जाता है / भगवान महावीर के बाद ६२ वर्ष में तीन केवली *(527-465)*

1·गौतम स्वामी *(607-515)*

2·सुधर्मा *(607-507)*

3·जम्बूस्वामी *(542-465)*

इसके बाद *100* वर्षों में पांच श्रुत केवली

आचार्य भद्रबाहु –अंतिम श्रुत केवली *(433-357)*

जैन धर्म कितना प्राचीन है यह कहाँ जाना सम्भव नही है / महावीर स्वामी ने ईसा के*468* वर्ष पूर्ण निर्वाण प्राप्त किया था इसी समय से पीछे कुछ लोग विशेषकर यूरोपियन विद्द्वान जैन धर्म का प्रचलित होना मानते है/ प्रो० जैकोबी जैसे विद्वानों ने अनुसन्धान के द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि जैन धर्म बौद्ध धर्म से पहले का है जैन ने अपने ग्रंथों को आगम, पुराण आदि में बाँटा है/ उदयगिरी, जूनागढ़ आदि के शिलालेखों में भी यह प्रतीत होता है कि जैन धर्म प्राचीन है हिन्दू ग्रन्थ,स्कन्द पुराण *(*अध्याय*37)* केअनुसार ऋषभ देव नाभिराज के पुत्र थे ऋषभ के पुत्र भरत थे उनके नाम पर ही इस देश का नाम भारत पड़ा/[10]

जैन धर्म में तीर्थंकर *(*अरिहंत,जिनेन्द्र*)*उन *24* व्यक्तियों के लिए प्रयोग किया जाता है जो स्वयं तप के माध्यम से आत्मज्ञान *(*केवल्य ज्ञान*)* प्प्राप्त करते हैं जो संसार सागर से पार लगानेवाले तीर्थ की रचना करते है वह तीर्थकर कहलाते हैं/ तीर्थकर वह व्यक्ति है जिन्होंने पूरी तरह से क्रोध'छल,अभिमान,इच्छा आदि पर विजय प्राप्त की हो तीर्थंकर को इस नाम से कहा जाता है क्योंकि वे तीर्थ *(*पयान*)*एक जैन समुदाय के संस्थापक हैं जो पायन के रूप में मानव कष्ट को नदी पार कराता है/ जैन नीति शास्त्रों में वर्णन है कि जैन धर्म के *24* तीर्थंकरों में से भगवान आदिनाथ अर्थात भगवान ऋषभदेव ने कैलाश पर्वत पर *12* वें तीर्थंकर वसुपुज्य ने चम्पापुरी *22* वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ ने गिरनार पर्वत और *24* वें तीर्थंकर भगवान महावीर ने पावापुरी में मोक्ष प्राप्त किया शेष *20* तीर्थंकरों ने सम्मेद शिखर में मोक्ष प्राप्त किया जैन धर्म के *23* वें तीर्थंकरों भगवान पार्श्वनाथ ने भी तीर्थ में कठोर तप और ध्यान द्वारा मोक्ष प्राप्त किया था/अत*:* भगवान पार्श्वनाथ कि टोंक इस शिखर पर स्थित है/[11]

जैन शास्त्रों में लिखा है कि अपने जीवन में सम्मेद शिखर तीर्थ की एक बार भावपूर्ण यात्रा करने पर मृत्यु के बाद व्यक्ति को पशु योनि और नरक की प्राप्ति नहीं होती यह भी लिखा है कि जो व्यक्ति सम्मेद शिखर आकर पुरे मनभाव और निष्ठां से भक्ति करता है उसे मोक्ष प्राप्त होता है और इस संसार में सभी जन्मकर्म के बन्धनों से अगले *49* जन्मो तक मुक्त रहता है यह सब

तभी सम्भव है जब यहाँ पर सभी भक्त तीर्थंकरों को स्मरण कर उनके द्वारा दिए गए उपदेशों शिक्षाओं और सिद्धांतो का शुद्ध आचरण के साथ पालन करे/

मगध जनपद और उससे सम्बन्ध क्षेत्रों में पार्श्वनाथ के अनुययियो कि संख्या विशल थी महावीर के पिता स्वयं पार्श्वनाथ के धर्म के अनुयायी थे उनके वंश ज्ञात्रिक क्षत्रिय को प्रतिष्ठित माना जाता है/ महावीर के माता पिता के पार्श्वनाथ द्वारा प्रतिपादित निर्ग्रन्थ सिद्धांतानुसार ही तपस्या पूर्वक जीवन त्याग किया था/उत्तराध्यन में वर्णित पार्श्वनाथ परम्परा के आचार्य केशी और महावीर के गणधर गौतम सम्वाद की प्राचीन और नवीन निर्ग्रन्थ परम्परा की जीवतंता स्पष्ट है भगवती सूत्र में पार्श्वनाथ के अनुयायी श्रावक कालासवेसियपुत्त एवं महावीर के अनुयायी के बीच हुए विवाद का रोचक विवरण है नाम धम्मकहाओ से ज्ञात होता है कि काली नामक महिला पार्श्वनाथ के मत में दीक्षा ग्रहण कर साध्वियों के प्रधान पुष्पुचला के अनुशासन से सम्मिलित हुए थी/ उप्पला की दो भाग्नियाँ पार्श्वनाथ के मत में दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् कठोर जीवन यापन सह नही कर पाने के कारण ब्राह्मण धर्मानुयायी परिजिकाएँ बन गई /[12]

पार्श्वनाथ के सिद्धांत – जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने चतुर्याम का सिद्धांत प्रतिपादित किया था/ पार्श्वनाथ का श्रमण पयान पर गहरा प्रभाव पड़ा इसलिए आज भी पार्श्वनाथ को माननेवालो को ही जैनी माना जाता है/ इन्होने पूर्व के तीर्थंकरों के सिद्धांतो को अपने सिद्धांत में इन्होने मिलाया/ इन्होने चतुर्याम में ऋषभनाथ की सर्वत्र त्याग रूप अकिंचन, मुनिवृति, नेमिनाथ की निरिहंता व अहिंसा को समन्वित किया/ जैन आगमो तथा बौद्ध के पालि ग्रथों में चतुर्याम का उल्लेख मिलता है/ इस चतुर्याम के सिद्धांत को जैन ग्रन्थ में चार नामों से जाना जाता है जो इस प्रकार है-

1·अहिंसा

2·अमृषावाद

3·अस्तेय

4·अपरिग्रह

अहिंसा- जीवों पर हिंसा न करने को जैनधर्म में अहिंसा कहा जाता है यह केवल गतिशील द्रव्यों में ही नहीं बल्कि वह वनस्पति, क्षित्ति, जल आदि में भी पाया जाता है/ इसलिए जैन दार्शनिक विचारधारा में इन सभी जीवों की हिंसा करने को निषिद्ध कर्म माना जाता है इसलिए जैन सन्यासियों में नाक और मुंह में कपडा बंधकर चलने कि परम्परा चल पड़ी / अहिंसा के पालन के लिए जीवों की हिंसां करने तक ही सिमित नही था बल्कि मन वचन और कर्म तीनों से अहिंसा का पालन करना चाहिए/[13]

सत्य- जैन ग्रथों में से अनुसार सत्य बोलना चाहिए जो सबका हित करे तथा प्रिय हो इस व्रत का पालन करने के लिए मनुष्य को लोक भय क्रोध मान आदि का परित्याग कर देना चाहिए साथ ही किसी की हंसी नहीं उडाना चाहिए/

अस्तेय- विषयों जैन ग्रथों में स्वामी द्वारा बिना किसी कुछ वास्तु साधन दिए उसको ग्रहण करना अस्तेय है धन तथा सम्पति को चुराना का अर्थ है किसी के जीवन है/ किसी के जीवन का अपहरण करना/धन जीवन के लिए आवश्यक है लेकिन किसी के धन का अपहरण करने का निषेध है/

अपरिग्रह-विषयों के प्रति आसक्ति का त्याग करना ही अपरिग्रह है/जिनसे इन्द्रिय सुखों कि प्राप्ति होती है वे विषय जैन धर्म में त्याग योग्य है जैसे स्पर्श, रूप,स्वाद आदि / जैन आगमो के अनुसार पार्श्वनाथ के चतुर्याम इस प्रकार थे-

1·सर्व प्रणातिक्रम से विरमण-इसमें जैन मुनियों को अहिंसा के व्रत का दृष्टा पूर्वक पालन करने में पञ्च उपनियमों का उपदेश है

इर्या समिति - जिस रास्ते कीड़े मकोड़े कुचलकर ना मरे वैसे रास्ते चलना चाहिए/

भाषा समिति - मधुर वाणी बोलनी चाहिए/

एषणा समिति - भोजन में कीटाणु की हिंसा न करे /

आदान-क्षेपक्षा समिति- वैसे सामग्री का उपयोग ना करे जिससे कीड़े मकोड़े की हिंसा हो/

व्युत्सर्ग समिति -मल मूत्र वैसे जगह त्यागना चाहिए जहाँ कीड़े कीटाणु कि हिंसा ना हो

सर्व मृषा वाद से विमरण - इसमें श्रमण निर्ग्रन्थ मुनियों को सदैव सत्य बोलने हेतु निम्न पांच उपनियमो के पालन का आदेश है-

अनु षिम भाषासी- बिना सोचे समझे नहीं बोलना चाहिए/

कोहे परिजनति-क्रोध आने पर मौन रहना/

लोभ परिजानति - लोभ होने पर मौन रहना

भयं परि जानति -भय उत्पन्न होने पर भी असत्य न बोलना

हांस परिजानति -हंसी मजाक में भी असत्य ना बोलना

सर्व अदत्तादान से विरमण - इसमें अस्तेय व्रत का गम्भीरता पूर्वक पालन करने का आदेश दिया गया है

1·बिना आज्ञा किसी के घर के भीतर नहीं जाना

2·गुरु की आज्ञा के बिना भिक्षा में मिले भोजन ग्रहण नहीं करना

3·बिना आज्ञा किसी के घर में निवास नहीं करना

4·किसी के घर में रहकर मालिक से पूछे बिना वस्तु का उपयोग नहीं करना

अपरिग्रह-सर्व बहिस्या दान से विरमण –

1·क्षत्रेंद्रिय के विषय शब्द के प्रति आसक्त भाव रखना

2·चक्षुरिन्द्रिय के विषय शब्द के प्रति आसक्त का भाव रखना

3·घ्राणेंन्द्रिय विषय गंध के प्रति आसक्त भाव रखना

4·रसनेन्द्रिय के विषय रस के प्रति आसक्त भाव रखना

5·स्पर्शेन्द्रिय के विषय स्पर्श के प्रति आसक्त भाव रखना [14]

पार्श्वनाथ का यह चतुर्याम महवीर के पूर्व से ही प्रचलन में था/ जैन चतुर्याम का उल्लेख बौद्ध ग्रंथों में मिलता है उसे निर्ग्रन्थ नाथयुत्त महावीर का धर्म कहा गया है किन्तु पार्श्वनाथ की परम्परा से इसका सम्बन्ध स्वीकार किया जा सकता है इस प्रकार जैन धारक के 23 वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का इस धर्म में महत्वपूर्ण योगदान रहा वह एक ऐतिहासिक पुरुष है/[15]

निष्कर्षत: दृष्टिगत होता है कि भगवान पार्श्वनाथ की वाणी में करुणता, मधुरता शांति तीनों का समिश्रण था/ इस समय जब तप परम्परा का ही चारों तरफ बोलबाला था लोग शरीर को कष्ट दे रहे थे/ भगवान पार्श्वनाथ ने अपने ज्ञान वैराग्यपूर्ण उपदेशों में जप तप की सही पहचान लोगों तक पहुंचाई/ पार्श्व के उपदेशों का प्रभाव विदेशों में भी दिखलाई पड़ता है/ भारतीयों में भरद्वाज नचिकेता अजित कम्बल पर प्रतिछाया दिखलाई पड़ती है वही यूनानी दार्शनिक पाइथागोरस क भी नाम लिया जा सकता है जो जीवात्मा के कर्म सिद्धांत और पुनर्जन्म में विश्वास रखते थे /

[1] हरिभाई जैन,ब्रह्मचारी,भगवान पारसनाथ,श्री कुंद कुंद कहान परमार्थिक ट्रस्ट,मुंबई,पृष्ठ 11.

[2] बसु,नगेन्द्र,चौबीस तीर्थंकर कि जीवनी,इंडियन कल्चर,पृष्ठ 319.

[3] पूर्वोक्त,भगवान पारसनाथ, पृष्ठ 30

[4] वही पृष्ठ 44.

[5] धींग,दिलीप,(संपा)जैन इतिहास के प्रसंग,सम्यग्य प्रचारक मंडल, जयपुर पृष्ठ 54.

[6] पूर्वोक्त, भगवान पारसनाथ, पृष्ठ21-22.

[7] वही,पृष्ठ 25.

[8] वही पृष्ठ 31.

[9] सिंह, महेंद्र,बौद्ध तथा जैन धर्म,विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी पृष्ठ37.

[10] हस्तीमल,आचार्य श्री,जैन इतिहास के प्रसंग भाग 6,सम्यग्य प्रचारक मंडल,जयपुर,पृष्ठ 46,

[11] जैन, सागरमल,जैन धर्म दर्शन और संस्कृति,पार्श्वनाथ विद्यापीठ,वाराणसी,पृष्ठ 34.

[12] बोरदिया,हीराबाई,जैन धर्म की प्रमुख साध्वियां और महिलाएं,पार्श्वनाथ विद्यापीठ,वाराणसी,1991,पृष्ठ 47.

[13] चन्द्र, कैलाश,जैन इतिहास के प्रसंग,डी·के·प्रिंट,नई दिल्लीपृष्ठ,47.

[14] पूर्वोक्त,भगवान पारसनाथ,पृष्ठ 37.

[15] जैन,बलभद्र,भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ,भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ कमिटी ,बम्बई,1975,पृष्ठ 56.